An International Multidisciplinary Journal
अनन्यशास्त्रम्™
(A Unique Treatise of Knowledge)
ISSN:3049-3927 (Online)

ANANYAŚĀSTRAM:
An International Multidisciplinary Journal
(A Unique Treatise of Knowledge)
Peer-Reviewed | Refereed | Open Access Journal
DOI: https://doi.org/10.64328/aimjv01i030040

Volume: 01 | Issue: 03 | December: 2025
Review Article

भारतीय गुरुकुल परंपरा और आधुनिक शिक्षणप्रणाली - समग्र चिंतन

डॉ. नीलिमा देशपांडे

Abstract

प्राचीन भारत में शिक्षापद्धती का एक उच्चतम स्त्रोत विकसित था। गुरु के निरीक्षण में गुरुगृही रहकर शिक्षा प्राप्त करना। गुरुकुल ज्ञान परंपरा - गुरु का परिवार बनकर अध्ययन कर अपने ज्ञान को विकसित करना। गुरुकुल की स्थापना अधिकतर वनों में उपवन में तथा तो किसी राजा सामन्तो के प्रोत्साहन पाकर होती थी। नालंदा, तक्षशीला और विक्रमशीला जैसे विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा पद्धति के विकसित रूप थे। आधुनिक शिक्षा प्रणाली आज की शिक्षा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्रोत है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में किताबी ज्ञान को अधिक महत्व दिया गया है। पाठ्यक्रम की ढाचे में ही विद्यार्थी पर्याप्त शिक्षा प्रदान कर रहा है। भारत का एक आदर्श सक्षम भारतीय के रुप में विद्यार्थी विकसित होना यही शिक्षा का मुख्य उदेश होना गुरुकुलों का उद्देश्य था, जिसकी कमी आधुनिक शिक्षा प्रणाली में दिखती है जो विकसित होनी चाहिये। शालेय माध्यम से महाविद्यालयीन माध्यम तक शिक्षा प्रवाह आधुनिक काल के शिक्षा प्रणाली का अध्ययन पथ है। किसी एक विषय की शिक्षा प्राप्त कर अपनी आर्थिक उन्नती को प्रमुख उद्देश मानकर विद्यार्थी शिक्षण ले रहा है। जो विद्यार्थी को एक ही विषय की अध्ययन पर संकुचित करता है। गुरुकुल शिक्षा परंपरा और आधुनिक शिक्षा पद्धती का समग्र चिंतन करना ही इस शोध निबंध का मुख्य उद्देश है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की फायदे तथा आधुनिक शिक्षा प्रणाली में दिखते अभाव, इसपर चिंतन भारतीय शिक्षा प्रणाली की स्रोत पर अधिक विस्तृत दृष्टी से देखने की ऊर्जा देगी।

Keywords: नालंदा, तक्षशिला, गुरुकुल, शिक्षाप्रणाली, विश्वविद्यालय, इतिहास, ज्ञानपरंपरा, तत्वज्ञान.

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली:

गुरुकुल का सामान्य अर्थ है गुरु का परिवार अथवा गुरु का वंश। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को भारतीय आदर्श शिक्षा का प्रमाण माना जाता है। भारतीय सभ्यता, संस्कार तथा संस्कृति के विकास में गुरूकुलों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गुरुकुल मुख्यतः वनों में, गावों में अथवा नगरों में या नगर के बाहर पंडित विद्वानों , ब्राह्मणों द्वारा हो चलाये जाते थे। गुरुकुल अंतर्गत वनों, आश्रमों, ऋषि तथा शिक्षकोंद्वारा चलाये जानेवाले आवासीय विद्यालयों का समावेश है। जहा छात्र आपने गुरु के साथ रहते है तथा ज्ञान के साथ सभी कला, शास्त्रों तथा नैतिक, व्यावहारिक ग्यान का भी विधिवत शिक्षण दिया जाता है। गुरकुलों के आचार्य गुरु स्वयं अत्यंत बुद्धिमान होते थे तथा धनवान तथा गरीब सभी स्तरों के छात्रों को

*Corresponding Author:

© 2025 Author(s). Published by Young India Publication, Gandhinagar, Gujarat, India

An International Multidisciplinary Journal
(A Unique Treatise of Knowledge)
ISSN : 3049-3927(Online)

गुरुकुल में सिखाना सामान होता था। गुरुकुल शिक्षा पद्धति में किमान आठ साल गुरूकुल में रहना अनिवार्य होता था। छात्र आपने आयु के पच्चीस साल तक गुरुकुल में रहकर शिक्षा ले सकते है।

प्राचीन गुरुकुल तीन प्रकार के माने जाते है :

१) गुरुकुल : आश्रम या गुरुकुल निवास में गुरु के संगत में रहकर विधिवत शिक्षा ग्रहण करना।

२) परिषद : जहां पर अन्य विशेष पंडितों से भी शिक्षा प्राप्ति होती थी ऐसे गुरुकुल।

३) तपस्थली : बड़े बड़े समेंलन, प्रवचनों में तथा संगोष्ठिओं से ज्ञान अर्चन होता था।

गुरुकुलों में छात्र के समग्र विकासपर भी उतना ही लक्ष क्रेंद्रित किया जाता है। लगभग १५०० ईसापूर्व से भारत में यह शिक्षा प्रणाली शुरू हो गई थी। इस शिक्षा प्रणाली में छात्र शैक्षणिक शिक्षा के साथ साथ छात्र के नैतिक और आध्यात्मिक विकास को भी अत्यंत महत्व दिया जाता था। गुरुकुलों में शिष्य गुरु के साथ ही रहते थे जिससे गुरु और शिष्य में एक गहन सम्बन्ध विकसित होते थे, जिससे आदर्श शिक्षा को बढ़ावा मिलना शुरू हुआ और साथ ही नैतिक और व्यावहारिक कौशल्य भी विकसित होने लगे।

गुरुकुल शिक्षाविधि :

गुरुकुल में छात्र का आगमन आयुनुसार होता था। बालक छे -आठ साल तथा ग्यारहवीं आयुमें गुरूकुलों में ले जाया करते थे। यहां सभी वर्णों के ब्राह्मण, क्षत्रिय, क्षुद्र, वैश्य कुलों के छात्रों को गुरुकुल में सीखने की मान्यता थी। गुरूकुलों मे ब्रह्मचारी रहकर शिक्षा ग्रहण की जाती थी। गुरु सभी शिष्यों को शास्त्र के साथ ही अन्य कलाओं में पारंगत करते थे। शिक्षा पूरी होनेपर उन्हें विवाह कर गृहस्थाश्रम भेजते थे। समाज तथा अपने कुटुंब प्रति एक सक्षम नागरिक बनकर ही छात्र को गुरुकुल के विधिवत समाज में आना पड़ता था। ऐसे शिष्यों को समाज भी अलग प्रतिष्ठा से देखता था। गुरुकुलों में प्रवेश पाने के लिए भी एक विशेष परीक्षा देनी पड़ती थी। गुरु की परीक्षा में उत्तीर्ण होनेपर ही शिष्य को गुरु दीक्षा देते थे। शिक्षा पूर्ण होनेपर समावर्तन संस्कार कर के छात्र को अपने परिवारों में भेजते थे। शिष्य गुरु को अपनी शक्तीनुसार गुरुदक्षिणा अर्पण करते थे। गुरुकुल परम्परा से गुरुगृही शिक्षा लेने जाते समय 'उपनयन संस्कार' कर गुरुकुल भेजते थे और गुरुकुल से परिवार तथा समाज में शिक्षा पूर्ति बाद जाते समय 'समावर्तन संस्कार' कर गुरु शिष्य को गृहस्थाश्रम भेजते थे। यह हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है।

भारतीय की प्राचीन शिक्षापद्धति में अध्ययन विधि, ज्ञान प्राप्ति के दो शैक्षणिक स्त्रोत दिखाई देते है –

१) अनौपचारिक , २) औपचारिक

१) अनौपचारिक केंद्र - जहां परिवार, त्यौहार , पुरोहित, पण्डित, संन्यासी द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता था, तो माता ही बच्चे की सर्वपथम गुरु होती थी। पिता को बच्चा शिक्षक के रूप में अनुभव करते थे।

ANANYAŚĀSTRAM:
An International Multidisciplinary Journal
(A Unique Treatise of Knowledge)
ISSN : 3049-3927(Online)

२) औपचारिक केंद्र - यंहा शिक्षासंस्था में जाकर शिक्षा ली जाती थी। शिक्षा मंदिर, आश्रम, गुरुकुल तथा उच्च शिक्षा केंद्रों का समावेश इन में होता है।

गुरुकुलों की स्थापना अधिकांशतः वनों , उपवनों , ग्रामों या नगरों में होती थी। गुरूकुलों के दार्शनिक आचार्य अध्ययन, चिंतन, निवास निर्जन वनों में करना अधिक पसंद करते थे। जैसे वाल्मीक, सांदीपनि, कण्व ऋषियों के आश्रम वनों में ही थे। इन आश्रमों में दर्शन शास्त्र मुख्य अध्ययन विषय होता था, उसी के साथ व्याकरण, ज्योतिष तथा नागरिकशास्त्र का भी ज्ञान छात्रों को देते थे।

गुरुकुल दिनचर्या : गुरकुल दिनचर्या में सुबह जल्दी उठना, दैनिक शारीरिक विधि, योगाभ्यास, संध्या, स्वाध्याय, कक्षाएं मध्यान भोजन, कक्षाएं, खेल, शुद्धि, संध्योपासना रात्रि भोजन, स्वाध्याय, शयन।

गुरुकुल प्रणाली पाठ्यक्रम :

पाणिनि व्याकरण - स्कूल, भाषा, वर्णोच्चारण, व्याकरण तथा व्याकरण शास्त्र , छंद शास्त्र तथा पिंगलशास्त्र, मनुस्मृति, रामायण,(वाल्मीकि), महाभारत , छः शास्त्र एवं ऋषि टिकाएं, चार ब्राह्मण ग्रंथ, ज्योतिष, अंकगणित, भूगोल, भूगर्भ - विज्ञान, चार उपवेद

गुरुकुल गांवों से दूर होनेपर दो फायदे होते थे –

१) गुरुकुलों में एकान्त तथा पवित्र वातावरण बना रहता था।

२) गृहस्थ आचार्यों का आवश्यक गृह सामग्री का प्रयोजन करना भी आसान होता था। ब्रहमचारों को भिक्षाटन के लिए अधिक भटकना नहीं पड़ता था। गुरुकुलों के आचार्यों को मदद करना स्वयं राज्य भी अपना कर्तव्य समझता था।

गुरुकुल रचना प्रस्थापित होने की पूरक समाजस्थिति -

१) बहोत बार सामंतो तथा राजाओं से प्रोत्साहन प्राप्त होनेपर विदवान पंडित उनके राजधानी में ही बस जाते थे। फिर वहां पर शिक्षा केंद्र बनते थे। तक्षशिला, पाटलीपुत्र, मिथिला, कान्यकुब्ज, तंजोर यह शिक्षा केंद्र इसी के उदहारण है।

२) कहीं पर राजदरबारों में राजा विदवानों को बुलाकर संगोष्ठी का आयोजन होता था। उपस्थित विद्वानों की विदवत्ता देखकर उन्हें भूमि दान देते थे, उनके जीविका का प्रबंध करते थे। उनकी आश्रय से पंडित ज्ञानी वहां पर वसनेसे नया गांव प्रस्थापित होते थे , ऐसी गावों को 'अग्रसर ' कहा जाता था।

३) ईसा की दूसरी शताब्दी में हिन्दू सम्प्रदायों तथा मठों के आचार्यों से प्रभावित होकर मठ भी शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र बने। जैसे शंकराचार्य , रामानुजाचार्य, माधवाचार्य आदि।

४) सम्राट अशोक ईसा पूर्व ३०० बौद्ध विहारों में विशेष उन्नति की जिससे यह विहार विद्या के महा केंद्र बने। नालंदा विश्वविद्यालय(ईसा ४५०), वल्लभी (ईसा ७००), विक्रमशिला (ईसा ८००) प्रमुख शिक्षण संस्थाएं रूप में अग्रणी रही।

ANANYAŚĀSTRAM:
An International Multidisciplinary Journal
(A Unique Treatise of Knowledge)
ISSN : 3049-3927(Online)

५) इसी का हिन्दू रूप हमें मंदिरों में स्थापित मठों के रूप में दिखता है।

प्राचीन आदर्श गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की उदाहरण -

गुरुकुल शिक्षा पद्धति का प्रयोग कैसे होता था ?, किस प्रकार एक आदर्श और विस्तृत महा गुरुकुल रचना इतने पुराने काल में भी विश्व का आदर्श उदाहरण थी ? , नालन्दा, तक्षशिला जैसे गुरूकुलों की रचना, अध्ययन पद्धति का अध्ययन करने से भारतीय संस्कृति कितनी समृद्ध थी यह आकलन होता है। इनका आदर्श सामने रखकर वर्तमान शिक्षा प्रणाली में क्या कुछ अंश समाविष्ट कर सकते है , इसी लिए इसका अध्ययन जरुरी है।

इसीलिए मैंने प्रस्तुत शोध निबंध में मैंने नालंदा विश्वविद्यालय तथा तक्षशिला की संक्षिप्त टिपण्णी करना उचित समझा।

नालंदा विश्वविद्यालय -

स्थान और स्थापना :

इस की स्थापना गुप्त साम्रज्य के काल में ५वी शताब्दी ईसी में हुई थी। नांलदा जिले में स्थित या विश्वविद्यालय याने आधुनिक बिहार। यह जगह पाटलिपुत्र और वैशाली जैसे ऐतिहासिक नगरों के पास था। यह बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था , इसीलिए यह एक आदर्श स्थल माना गया। गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम ने इसकी स्थापना की। गुप्त शासन काल भारतीय कला, शैक्षणिक प्रगति, संस्कृति का स्वर्ण काल माना गया है। शुरुवात में मठों के रूप में स्थापित नालंदा ने कुछी काल में एक विश्व विद्यालय के रूप में प्रस्थापित होकर विदेशों में भी प्रसिद्ध हुआ। नांलदा विश्व विद्यालय दुनिया का पहिला आवासीय विश्वविद्यालय था। इसे ध्यान तथा अध्ययन उन्नति के उद्देश्य से बनाया गया था।

शैक्षणिक स्वरुप और पाठ्यक्रम : शिक्षा अंतर्गत बौद्ध धर्म के साथ तर्कशास्त्र , गणित, चिकित्सा विषय अग्रणी थे। चिकित्सा में आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा की शिक्षा दी जाती थी। गणित में अंकगणित का गहन अध्ययन होता था। इसीलिए अपनी व्यापक शिक्षा प्रणाली के कारन समकालीन दुनिया में विख्यात हो गया था। शिक्षा पद्धति में व्याख्यान, तर्कवितर्क, प्रशोन्तर तो अधिक महत्व होता था, इसी कारन यहाँ के छात्र का बौद्धिक विकास तीव्र होता था। नालंदा में प्रवेश मिलाना आसान नहीं था। दस छात्रों की परीक्षा लेने पर कोई तीन ही योग्यता पाकर नालंदा प्रवेश कर सकते थे। प्रवेशद्वार पर ही प्रवेश परीक्षा होती थी, यह परीक्षा बौद्ध पंडित लेते थे। प्रवेश मिलनेपर छात्र कम से कम आठ साल आपने गुरु से शिक्षा प्राप्त कर सकता था।

प्रमुख आचार्य और विद्वान : इस विश्व विद्यालय में १०,००० से भी अधिक छात्र शिक्षा लेते थे और १५०० से अधिक शिक्षक कार्यरत थे। छात्रों की योग्यता देखकर ही उनका प्रवेश होता था। यहाँ आचार्य के रूप में कही विदवान आचार्य रहे , जिन में नागार्जुन और धर्मपाल यह नाम विशेष उल्लेखनीय है। नागार्जुन महायान बौद्ध धर्म के प्रमुख प्रवर्तक थे और नांलदा में दर्शन और तर्कशास्त्र का विधिवत ज्ञान देते थे। धर्मपाल भी महान आचार्य थे जिन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचार में महत्वपूर्ण कार्य किया था।

An International Multidisciplinary Journal
(A Unique Treatise of Knowledge)
ISSN : 3049-3927(Online)

भौतिक संरचना : नालंदा का परिसर स्तूपों, ध्यान केंद्रों, विशाल भवनों से सुसज्ज था। गुरुनिवास कक्ष, अध्ययन कक्ष, छात्रों के निवास स्थान , ग्रंथालय इन सब की एक आदर्श रचना की गयी थी।

नालंदा ग्रंथालय : विश्वविद्यालय में भव्य पुस्तकालय था जिसे 'धर्मगंज ' के नाम से जाना जाता था। उस काल का वह सब से बड़ा ग्रंथालय था। इस ग्रंथालय के तीन विभाग थे। इनके नाम भवनोंकृरत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजककृमें थे । दर्शन, विज्ञान, साहित्य, बौद्धधर्म पर आधारित शास्त्र ग्रन्थ पर आधारित अनेक पांडुलिपियाँ संग्रही थी। इनका अध्ययन नालंदा के पंडितों द्वारा होता था। यह नौ मंजिले पुस्तकालय था और नब्बे लाख से भी अधिक ग्रन्थ सम्पदा इस में उपलब्ध थी।

विद्यार्थी और विदेशी छात्र : यहाँ दुनियाभर के विद्यार्थी शिक्षा लेने आते थे। दलाई लामा ने भी कहा है की हमर पास जो भी बौद्धज्ञान है वह नालंदा से प्राप्त है, चीन से आये हवेनसांग और इत्सिंग जैसे यात्रियों ने भी नालंदा की शिक्षा प्रणाली की विस्तृत जानकारी दी है। उनके विवरणों नुसार नालन्दा में कोरिया, तिब्बत, चीन, जापान, से छात्र नालंदा में अध्ययन करने आते थे। वासुबन्धु, संत रक्षिता, कमलशिला जैसे महा पंडित यहीं तैयार हूए। नालन्दा में शिक्षा की धारणा स्वयं उन्नति, अपने ज्ञान को बढ़ाना थी।

तक्षशिला विश्व विद्यालय - प्राचीन भारतीय गुरुकुल परम्परा :

स्थान और स्थापना : वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी जिले में स्थित था। स्थापना पाँचवी शताब्दी के आसपास हुई ऐसे माना जाता है। यह विश्व विद्यालय पश्चिम और पूर्व के सांस्कृतिक , बौद्धिक ज्ञान का केंद्र था।

शैक्षणिक पाठ्यक्रम : तक्षशिला एक शिक्षकों का आश्रम समूह था, जहाँ पर विविध विषयों , शास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। यहा सैन्य विज्ञान, वैदिक साहित्य, खगोलशास्त्र और व्याकरण तक प्रमुख अध्ययन और चिकित्सा में आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा का महत्व था।

शिक्षक सौर विदवान : तक्षशिला के प्रतिष्ठित शिक्षकों में प्रमुख नाम है चाणक्य, पाणिनि। 'अर्थशास्त्र' के रचनाकार चाणक्य राजनीती और शासन इन क्षेत्रों में अपने अध्ययन से नया विचार भारतीय ज्ञान परम्परा में आदर्श बनाया। पाणिनि का 'अष्टध्यायी' संस्कृत व्याकरण का आधार ग्रन्थ माना जाता है।

छात्र प्रवेश और जीवन :

तक्षशिला में कोई औपचारिक प्रकिया नहीं थी। छात्र अपने गुरु आश्रम में रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे। यहा का जीवन अनुशासन पूर्ण था, शैक्षणिक तथा व्यावहारिक ज्ञान का अध्ययन पूर्ण रूप से दिया जाता था।

तक्षशिला विश्वविद्यालय बौद्धिक धरोहर को समृद्ध किया। तक्षशिला का पांचवी शताब्दी ईस्वी में हूणों के आक्रमण का बाद पतन होना शुरू हुआ।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के लाभ :

१) गुरुगृही या आश्रमों में गुरु के साथ रहकर अपना बौद्धिक, मानसिक विकास करना।

An International Multidisciplinary Journal
(A Unique Treatise of Knowledge)
ISSN : 3049-3927(Online)

२) गुरुकुल आवासीय होने के कारन हर छात्र पर विशेष ध्यान दिया जाता है। छात्र को अपनी बौद्धिक पात्रतानुसार शिक्षा तथा विषय की आवश्यकता को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रदान की जाती थी और तैयार किया जाता था ।

३) गुरुकुल तथा आश्रम में रहने से छात्र प्रकृति से जुड़े रहते थे , जहा पर्यावरण से भी वह बहोत अनुभव करते थे , निसर्ग का महत्व समझकर उसके प्रति जागरूकता रखते थे ।

४) गुरुकुल शिक्षा केवल व्यक्ति के आर्थिक उन्नति के लिए नहीं होती थी, छात्र भविष्य में एक सजक नागरिक बनकर देश प्रति प्रेम, समर्पण की भावना भी उजागर रखे तथा अपनी सामजिक, नैतिक , सांस्कृतिक कर्तव्यों का भी पालन करे। गुरुकुल एक व्यापक और सर्वांगीण उन्नति की विचारप्रणाली थी ।

५) इस शिक्षा में नैतिक तथा आचरिक शिक्षा पर भी उतना ही लक्ष केंद्रित किया जाता था । उससे चरित्र निर्माण में सहायता होती थी ।

६) आध्यात्मिक विकास का उदेश्य, छात्र को खुद को अंतर मन में केंद्रित करने का ग्यान दिया जाता था । आत्मोन्नति पर अधिक प्रयास होता था। उपनिषदों का ज्ञान, कंठो पनिषद से अन्तर्मुखता का ज्ञान से छात्रों का आध्यात्मिक विकास होता था।

७) संस्कृत में शिक्षा : गुरुकुलों के संचार माध्यम संस्कृत था। गुरुकुल में हिन्दू धर्म, वेदों का ज्ञान दिया जाता था। इसी कारन प्रमुख शास्त्र विद्या ग्रहण करने की भाषा संस्कृत थी।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली :

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम स्कुल, विद्यालय, विश्वविद्यालयों का समावेश होता है। इस शिक्षा प्रणाली की नींव ही पाठ्यक्रम है। जो पूरा होनेपर छात्र आपने शिक्षा प्राप्त वषय में पारंगत होकर उसपर आधरित कहा नौकरी या अपना खुद का व्यवसाय शुरू कर के अपना आर्थिक व्यवस्था बना सकता है । शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य ही व्यक्तिगत अर्थकारण है। इस शिक्षा में आपने आयु के तीन चार साल के उम्र से ही छात्र शिक्षा की जुड़ जाता है। ज्यादातर शिक्षा की भाषा इंग्रजी हो गई है। अंग्रेजी भाषा की स्कुल में अन्य भाषाओँ का ज्ञान कम होता जा रहा है। आपने शिक्षा केंद्रों में खुद की मातृभाषा में संवाद करने की परंपरा लगभग समाप्त होती जा रही है। अब पाठ्यक्रमों में अन्य भाषा ग्यान में हमाँरी राष्ट्रभाषा , मातृभाषा, संस्कृत का परिचायात्मक समावेश है। स्कुल कॉलेज में छात्र संख्या भी अधिक होती है। कक्षानुसार शिक्षा का पाठ्यक्रम बनाया गया है, जो सभी को समान सीखना होता है।

एक वर्ग की छात्र संख्या करीबन ४० से ६० तक होती है और शिक्षक संख्या एक होती है। व्यक्तिगत मार्गदर्शन का आभाव होता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का अलग अपना एक अर्थकारण है, स्कुल में हर कक्षानुसार फीज अलग भरनी पड़ती है, विद्यालयों में विषयानुरूप फीज में बदल होते जाते है। शिक्षा केंद्रों की सुव्यवस्था पर भी फीज में बदल होते है। आज के छात्रों के सुविधा पर अधिक जोर दिया जाता है। शिक्षा कक्ष में फैन तथा एअर कंडीशनर भी लगाए जाते है तथा कॉलेज, स्कूलों में आने -जाने की सुविधा हो इसलिए स्वतंत्र वाहन व्यवस्था भी की जाती है। छात्रों को शिक्षा केन्द्रोनुसार यूनिफार्म,

An International Multidisciplinary Journal
(A Unique Treatise of Knowledge)
ISSN : 3049-3927(Online)

शूज, बैग, आय. डी. कार्ड सब पहनकर आना बंधनकारक होता है। इस शिक्षा पद्धति में सिमित घंटो के लिए छात्र की शिक्षा भवन होता है। इस शिक्षा अतिरिक्त उसे कुछ अन्य कलाओं में रूचि है, तो उस का अलग क्लास लगाना पड़ता है, इस शिक्षा का शालेय शिक्षाप्रणाली से सम्बद्ध नहीं होता।

आधुनिक काल में मानव ने की प्रगति को देख भविष्य में आनेवाली अनेक नई शैक्षणिक धोरणों के साथ हमारी भारतीय संस्कृति की जडे ओर भी मजबूत करना जरुरी है। वर्तमान शिक्षा डिजिटल विश्वपर अवलंबित है। कप्यूटर की निर्माण से एक नया संक्रमण हो गया और विश्व की जीवनशैली ही बदल गयी है। आज कुछ भी समस्या का हल कंप्यूटर द्वारा सहज प्राप्त होता है। जीवन को एक गति प्राप्त हो गई है। शिक्षा के दरवाजे भारत भर में ही सिमित नहीं रहे अब उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए विद्यार्थी परदेस भी जाने लगे है। शिक्षा अध्ययन में मौखिक विद्या, पुस्तकों से प्राप्त ग्यान, ऑनलाइन माध्यम से लिए जानेवाली शिक्षा जैसे अनेक उपलब्धियाँ है।

गुरुकुल परम्परा और आधुनिक शिक्षाप्रणाली - तुलना :

१. गुरुकुल शिक्षापद्धति में छात्र गुरुकुल में गुरु के साथ ही निवास में होता है, इसीलिए उनके गुरु-शिष्य संबंध बहोत ही दृढ़ होते है तथा इस सम्बन्ध में अतूट विश्वास, प्रेम, आदर, समर्पण सभी भाव जागृत होते है। गुरु को शिष्य के गुण-दोष पता होते है, व्यक्तिगत अध्ययन का लाभ यहाँ मिलता है।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली भी विस्तृत श्रृंखला है जो शिक्षा पूरी पाठ्यक्रम पर आधारित है। यहा शास्त्र और तंत्र की शिक्षा देकर विद्यार्थी किसी एक विषय में माहिर होकर अर्थप्राप्ति कर सकता है। इस शिक्षा प्रणाली में सब छात्र समूह से शिक्षा लेते है, हर एक विषय का एक शिक्षक होता है।

२. गुरुकुल परंपरा से विद्यार्थी के मन में देशप्रेम, देशसेवा भाव गुरुकुलों में ही उजागर होते है। आधुनिक शिक्षाप्रणाली में शिक्षा विषयपाठ्यक्रम पर अधिक केंद्रित होती है।

३. गुरुकुल परम्परा में एक ही गुरु से छात्र कई सालों तक विद्या ग्रहण करता है, आधुनिक प्रणाली में हर साल हर विषयनुसार शिक्षक बदलते रहते है, इस वजह ऐसा गुरुशिष्य दृढ़ संबंध बहोत ही कम प्रस्थापित होता है।

३. काल के परिवर्तन नुसार भारत की बदलती सामजिक, आर्थिक, राजकीय, नैतिक परिस्थिति यह भी मुख्य कारन है , जो दोनों शिक्षा पद्धति में इतना बदलाव ला रहे है।

आधुनिक शिक्षाप्रणाली में गुरुकुलों की भूमिका:

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आदर्श इतिहास को देखकर गुरूकुलों का पुनरुत्थान होना जरुरी है, इसकी आवश्यकता है यह समझ आता है। आज शिक्षा लेकर मनुष्य बौद्धिक सक्षम बन रहा है लेकिन अपनी संस्कृति, इतिहास, परम्परा के संस्कारों को जीवन की दिनचर्या में कही लुप्त करता जा रहा है। देश के प्रति प्रेम, धर्म का आचरण यह संस्कार समाज को मजबूत बनाता है। यह विचार हर छात्र के मन में गुरुकुलों की शिक्षा अंतर्गत ही जीवित रहता था।

ANANYAŚĀSTRAM:
An International Multidisciplinary Journal
(A Unique Treatise of Knowledge)
ISSN : 3049-3927(Online)

भारतीय तत्वज्ञान का महत्व अनन्यसाधारण है, आज परदेस से कई पंडित इसे आत्मसाद करने भारत आते है। आपने भारतीय परम्परा को देखते है, सींखते है। हमारे वर्तमान शिक्षप्रणाली में गुरुकुल परम्परा की कुछ अंश समाये तो भी शिक्षा में आदर्श बदलाव आ जायेगा।

निष्कर्ष:

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल परंपरा के सामुदायिक कार्यप्रणाली और शिक्षा धोरण जैसे सिद्धांतों का समावेश करेंगे तो वर्तमान शिक्षा प्रणाली पूरक बन सकती है। वर्तमान शिक्षाप्रणाली का भी अपना एक प्रवाह है जो आज के युग का प्रतिनिधित्व करते शिक्षा को आगे बढ़ा रही है, आनेवाली हर चुनौतीयों का स्वीकार कर समाज में शिक्षा का सर्वांगीण विकास कर रही है। गुरुकुल परम्परा से विद्यार्थी गुरुकुलों में ही अपनी शिक्षा अंतर्गत नैतिक और सामजिक कर्तव्यों को अंगभूत करता है। इसी भारतीय तत्वज्ञान हर विद्यार्थी का जीवन प्रवाह बने और देश प्रति प्रेम, आदर निर्माण हो इसी लिए आधुनिक शिक्षाप्रणाली में भारतीय तत्वज्ञान का धागा जुड़ जाना जरुरी है। पूर्णतः स्वतंत्र गुरूकुलों का निर्माण भी इस काल में हो रहा है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति को फिरसे कार्य में लाने के लिए भी भारत सरकार से भी बहोत उपक्रम कार्यरत हो रहे है। भारतीय सरकारने राष्ट्रिय शिक्षा नीति २०२० के तहत 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' (IKS) (Indian Knowledge System)की स्थापना की जिसका मूल उद्देश्य ही पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक शिक्षा और विज्ञान से जोड़ना। अब हर यूनिवर्सिटी, कॉलेज में शिक्षा प्रणाली के साथ IKS जुड़ रहा है जिससे शिक्षा प्रणाली में बदलाव आते दिखाई दे रहे है।

तात्पर्य , वर्तमान शिक्षा प्रणाली के व्यापकता तो बढ़ावा गुरुकुल प्रणाली के कुछ तत्वों को शामिल किया जाना चाहिए जिससे शिक्षा की उत्कृष्ठता और नैतिक विकास के साथ व्यक्तिगत विकास हो। नैतिक मूल्यों के साथ हुआ व्यक्तिगत विकास सामाजिक विकास की और बढ़ता। शिक्षा पर ही समाज का भविष्य निर्भर होता है। भारतीय गुरुकुल परम्परा नैतिकता, सामुदायिक जीवनपर आधारित शाश्वत आदर्श है, विश्वभर में अनुकरण प्रिय रचना है। भारतीय परंपरा को ओर भी सक्षम बनाने के लिए आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रवाह इस गुरुकुल शिक्षा पद्धति के मार्ग का अवलंब करके चली तो आदर्श शिक्षा प्रणाली बन जायेगी।

संदर्भ सूचि :

काणे , पि. बी. , धर्मशास्त्र का इतिहास , प्रथम द्वितीय, तृतीय भाग, अनुवादक अर्जुन चौबे काश्यप , उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, तृतीय संस्करण

आपटे, डी. जी., Universities in Ancient India, Faculty of Education and Psychology, Maharaja Sayajirao University of Baroda

संकलिया, हसमुख डी, The University of Nalanda, P. J. Paul & Co., 1934